राजभाषा मासिक ई-पत्रिका

जून 2024 संस्करण

दाघानि DVC

दामोदर घाटी निगम

इस माह के चयनित साहित्यकार

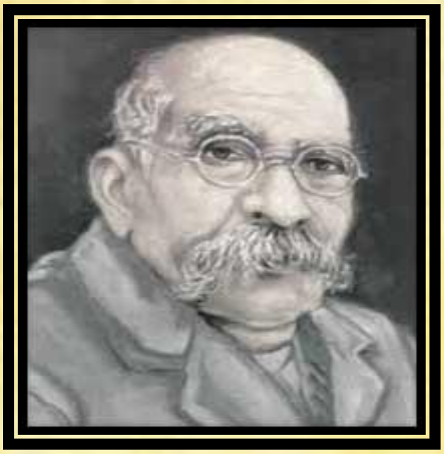

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

आधुनिक हिंदी साहित्य के पुरोधा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म 9 मई, 1864 में दौलतपुर, जिला रायबरेली, उत्तर में हुआ था। द्विवेदी जी के पिता का नाम **'रामसहाय द्विवेदी'** था। द्विवेदी जी का बचपन दौलतपुर में ही बीता।

द्विवेदी जी की आरंभिक शिक्षा गांव की पाठशाला से शुरू हुई। बाद में उनके पिताजी ने उनका विद्यालय में दाखिला करवाया।

कुछ वर्ष रेलवे में कार्य करने के बाद वह झांसी में ज़िला ट्रैफिक अधीक्षक के कार्यालय में मुख्य क्लर्क नियुक्त हुए। नौकरी के दौरान ही उन्होंने अपनी साहित्य सृजन यात्रा का भी आरंभ किया।

वर्ष 1903 में उनकी जिंदगी में एक नया मोड़ तब आया जब वह हिंदी की प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका **'सरस्वती'** के संपादक नियुक्त हुए। द्विवेदी जी वर्ष 1903 से 1920 तक सरस्वती पत्रिका के संपादक रहे और उन्होंने अपना सारा जीवन संपादन और हिंदी भाषा के सुधार में लगा दिया।

द्विवेदी जी ने आधुनिक हिंदी साहित्य की कई विधाओं में साहित्य का सृजन किया जिनमें मुख्य रूप से निबंध, आलोचना, इतिहास लेखन व संपादन शामिल हैं। यहाँ द्विवेदी जी की संपूर्ण साहित्यिक रचनाओं के बारे में विस्तार से बताया गया है, जो कि इस प्रकार हैं:

निबध-संग्रह- रसज्ञ रंजन, साहित्य-सीकर, साहित्य-संदर्भ, अद्भुत-आलाप

अन्य गद्य रचनाएँ - वैज्ञानिक कोश, नाट्यशास्त्र, हिंदी भाषा की उत्पति, संपत्तिशास्त्र (अर्थशास्त्र पर लिखी किताब), कालिदास की निरंकुशता, वनिता-विलाप, कालिदास और उनकी कविता, सुकवि संकीर्तन, अतीत स्मृति, महिला-मोद, वैचित्र्य-चित्रण, साहित्यालाप, कोविद कीर्तन, दृश्य दर्शन, पुरातत्व प्रसंग

संपादन- सरस्वती साहित्यिक पत्रिका (वर्ष 1903 – 1920 तक)

अनुवाद

- विनय विनोद – (वैराग्य शतक – भृतहरि)
- विहार वाटिका – (गीत गोविंद – जयदेव)
- स्नेह माला – (शृंगार शतक – भृतहरि)
- गंगा लहरी – (गंगा लहरी – पंडितराज जगन्नाथ)
- ऋतुतरंगिणी – (ऋतुसंहार – कालिदास)
- मेघदूत – (कालिदास)
- कुमारसंभवसार (कुमारसंभवम – कालिदास)
- भामिनी-विलास (भामिनी विलास- पंडितराज जगन्नाथ)
- अमृत लहरी (यमुना स्रोत – पंडितराज जगन्नाथ)
- बेकन-विचार-रत्नावली (निबंध – बेकन)
- स्वाधीनता (ऑन लिबर्टी – जॉन स्टुअर्ट मिल)

साम्राज्य से स्वराज्य तक

श्री बटेष्वरी दयाल शर्मा

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री बटेष्वरी दयाल शर्मा ''दादा'' का जन्म 8 मई,1907 को भिण्ड नगर में श्रीमातादीन शर्मा शिक्षक के यहां हुआ था। उन्होनें ग्वालियर राज्य से मिडिल परीक्षा पास की। सन् 1927 में हिन्दू मंच के बलिदान अंक पढने से राष्ट्र व समाजसेवा की भावना जागृत हुई। दादा ने अपने मित्र श्री हरिकिशन दास भूता व हरगोविन्द वर्मा के साथ भिण्ड नगर में सार्वजनिक पुस्तकालय व वाचनालय की स्थापना की । सन् 1928 में राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में भाग लिया। सन् 1930 में नमक सत्याग्रह में भाग लिया। 1939 में भिण्ड जिले के मिहोना बालाजी में विशाल राजनैतिक सम्मेलन हुआ उसमें स्वागत मंत्री के रूप में कार्य कर सम्मेलन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। सन् 1940 में शासकीय सेवा से त्यागपत्र देकर पूर्ण रूप से स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने लगे। 31 अगस्त, 1942 को श्री बटेष्वरी दयाल शर्मा को गिरफ्तार किया गया। उन्हें भिण्ड, ग्वालियर एवं मुंगावली (गुना) जेलों में रखा गया। 30 जून, 1943 को सभी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों श्रीनाथ शर्मा, दीपचंद पालीवाल, सम्पतराम लोहिया, अमर सिंह कुशवाह, रघुवीर सिंह कुशवाह, गंगाधर मुनीम, श्रीलाल श्रीवास्तव एवं रामानन्द कुस्तवार के साथ जेल से रिहा किया गया। सन् 1944 में भिण्ड में कम्युनिष्ट पार्टी की स्थापना की। श्री बटेष्वरी दयाल शर्मा भिण्ड जिले के सहकारिता क्षेत्र के जमीन से जुडे नेता थे। भिण्ड जिले के भूमि विकास बैंक की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान रहा। भूमिविकास बैंक के सचिव, नगरपालिका पार्षद जिला सहकारी संघ के मानसेवी सचिव, भिण्ड जिले के वरिष्ठ पत्रकार, दैनिक भदावर केहरी समाचार पत्र के प्रधान सम्पादक रहे। दैनिक हमारी आवाज ग्वालियर एवं सहकारी समाचार पत्र जबलपुर में वर्षों तक कार्य किया। भिण्ड जिला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संघ के उपाध्यक्ष रहे। भारत शासन द्वारा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ताम्रपत्र प्रदान किया गया। भारत शासन व मध्यप्रदेश शासन द्वारा सम्मान निधि प्रदान की गयी। 29 मई, 1988 को आपका स्वर्गवास हो गया।

बारिश के मौसम में ली जाने वाली कुछ महत्वपूर्ण सावधानियाँ

रंजित कुमार चौबे
वरिष्ठ प्रबंधक (संरक्षा) / संरक्षा प्रमुख,सी टी पी एस,
दामोदर घाटी निगम,चंद्रपुरा

बारिश के मौसम (मानसून) में कई सारे हादसे तो लोगों की लापरवाही और कुछ छोटी छोटी गलतियों के कारण होते हैं।
बारिश के मौसम चुभती जलती गर्मी से निजात दिलाता है पर वही अपने साथ में अनचाही बीमारियों को भी लेके आता है। बारिश, जुखाम और बुखार कुछ आम बीमारियाँ है जो इस मौसम में लोगों को हो जाती है।

इस मौसम में होने वाली बीमारियों से बचने के कुछ आसान से नुस्खे :

- **खान- पान में बरते सावधानी**

बारिश के वक़्त बीमारियों से ग्रसित होने की सम्भावना काफी अधिक होती है। इस मौसम में होने वाली काफी सारी बीमारियाँ गंदे पानी की वजह से होती है , इसीलिए हमें कोशिश करना है की हमेशा साफ़ और उबला हुआ पानी ही पिए। कच्चा खाना खाने से बचे हालांकि इस मौसम में सलाद के सेवन लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

- **अच्छे और मजबूत चप्पल पहने**

बारिश में मौसम जमीन छिछली हो जाती है , इसीलिए हमेशा ऐसे चप्पल पहने जिनको पहनने के पश्चात गिरने की सम्भावना कम रहती हो।

- **बाहर का खाना खाने से बचे**

बाहर का मसालेदार खाना बीमार होने की प्रमुख वजह बन सकता है। बिना किसी साफ़ - सफाई के बनाए हुए खाने में कीटाणु की संख्या अधिक होती है जो हमें बीमार कर सकता है इसीलिए कोशिश करे की बाहर के खाने का अधिक सेवन ना करना।

- **मच्छर और कीड़ों से करें सुरक्षा**

जमा हुआ पानीमच्छर के पनपने का स्थान बन सकता है इसीलिए ये कोशिश करे की हमारे आस पास कही पानी जमा न हो। हम अपने घरों में साफ़ सफाई रख कर केमच्छर के प्रकोप से बच सकते है। आपने आस - पास रखे हुए गमलो में एक बार निरिक्षण कर ले और इसके साथ कूलर का जमा हुआ पानी भी समय से बदलते रहे। छोटे छोटे सुझावों से हम अपने आप को सुरक्षित रख पायंगे।
बारिश के मौसम में कीड़े-मकोड़ों की समस्या भी हर घर में आम हो जाती है. बरसाती मच्छर जहां डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियों का कारण बन सकते हैं. वहीं मक्खियां और कॉकरोच भी घर को अनहाइजीनिक बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं. ऐसे में बरसाती कीड़ों से निजात पाने के लिए घर में स्प्रे और इंसेक्ट किलर जरूर रखें.

नमक के पानी में धोएं पैर

बारिश में होने वाले अनेक समस्याओं में से एक समस्या है फंगल इंफेक्शन. इस मौसम में हम खुद को चाहे जितना भी बारिश के पानी से बचा लें लेकिन हमारा पैर इस गंदे पानी की चपेट में आ ही जाते हैं. जिसकी वजह से पैरों में सड़न, खुजली और फोड़े फुंसी होने लगते हैं , इस प्रक्रिया इसे प्रतिरोध करती है l

इन बातों का भी रखें विशेष ध्यान :

हर बार की तरह इस मौसम में फिर से यातायात दुर्घटनाओं से लेकर बिजली के आउटेज जैसी कई चुनौतियां भी पैदा हो सकती हैं, इसलिए, अगर हम लोग इस मौसम का आनंद लेना चाहते हैं और किसी भी अनचाहे घटना का सामना नहीं करना चाहते हैं, तो हमें निम्नलिखित मॉनसून संरक्षा सुझावों का पालन करना चाहिए l

कभी-कभी हम लोगो को बटमौसमी स्थितियों की परवाह किए बिना कार्यालय में उपस्थित होना पड़ता है, चाहे वह क्लाइंट के साथ मिलना हो या महत्वपूर्ण परियोजना को समाप्त करना हो. उसके कारण, हमें छुट्टी लेने या घर से काम करने का मौका नहीं मिलता है. हालांकि, समस्याएं और चिंताएं अभी भी वही हैं, लेकिन इन दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं से बचने के लिए निश्चित रूप से इन संरक्षा सुझावों का पालन कर सकते हैं l

➢ सावधानी से गाड़ी चलाएं

जो लोग कार से कम्यूट करते हैं, उन्हें सतर्क रहना चाहिए और सभी यातायात कानूनों और संरक्षा उपायों का पालन करना चाहिए, खासकर मॉनसून के दौरान भी, क्योंकि ऐसे मौसम में हादसे होने की संभावना बढ़ जाती है. यदि संभव हो, बरसाती क्षेत्रों में बारिश कम होने से पहले हमें एक सुरक्षित स्थान पर रुकें. नियोक्ता भी अत्यधिक मौसमी स्थितियों के लिए घर से काम करने की नीतियों को प्रचारित कर सकते हैं l

➢ बारिश में वॉक करने ना निकलें

काम पर जाते समय बारिश का आनंद लेना आकर्षक लग सकता है, लेकिन ऐसा करना स्वस्थ्य के लिए सही नहीं है. बारिश के पानी से संपर्क में आने से बचना चाहिए क्योंकि इससे व्यक्ति को विभिन्न वाइरल बीमारियों जैसे लेपटोस्पिरोसिस और पैरों और नाखूनों में फंगल इंफेक्शन का खतरा हो सकता है l

➢ अपने साथ एक्स्ट्रा कपड़े हमेशा रखें

कभी-कभी बारिश कब आएगी यह कहाना थोड़ा मुश्किल हो सकता है, जो आगे चल के परेशानी का कारण बन सकता है. किसी भी शर्मिंदगी या स्वास्थ्य समस्या से बचने के लिए, काम करने के लिए सूखे कपड़े का पूरा जोड़ा साथ में रखना सलाहजनक है. अपने कार्यस्थल पर पहुंचते ही हमें अपने गीले कपड़ों को तुरंत बदल लेना चाहिए इससे हम होने वाली बीमारी से बच सकते हैं l

➢ अपने साथ छतरी और रेनकोट जरूर रखें

बरसाती मौसम में हमेशा अपने वाहन या काम पर छाता या रेनकोट रखें. बरसाती मौसम में अपने पास छाता होना अत्यंत आवश्यक होता है. यह न केवल हमें बीमार होने से बचाएगा, बल्कि यह हमें बरसात के दौरान अपने वॉलेट, कार्ड और फोन जैसे मूल्यवान सामग्री को गीले होने से रोकने में मदद करेगा l

➢ फोन चार्ज न करें

अपने फोन को कभी भी गीला होने पर चार्ज न करें, भले ही वह थोड़ा भी गीला हो. बिजली और पानी एकसाथ मिलकर घातक हो सकते हैं, जो खतरनाक बिजली के झटके का कारण भी बन सकते हैं. फोन को पूरी तरह सूखने दें, इसके बाद आप इसे चार्जिंग सॉकेट में प्लग कर सकते हैं.

स्मार्टफोन आज के समय में हर हाथ के लिए बेहद जरूरी बन चुके हैं. लेकिन बारिश में बिजली कड़कने के समय स्मार्टफोन का इस्तेमाल ना करे, यह सिर्फ खतरनाक ही नहीं जानलेवा भी साबित हो सकता है।

➢ इलेक्ट्रिकल खतरों का ध्यान रखें

इस बात से हम सब ही वाकिफ हैं कि पानी और बिजली का मेल मिलाप खतरनाक होता है. हम बाहर या दामोदर घाटी निगम के किसी भी क्षेत्र में विशेष रूप से तकनीकी क्षेत्र में काम करते हैं, तो बारिश के समय इलेक्ट्रिकल जोखिमों से सतर्क रहें. अगर ऐसा लगता है कि बारिश होने वाली है, तो विधुत उपकरण और मशीनरी को चलाना बंद करें और मौसम साफ होने तक प्रतीक्षा करें अन्यथाये विभागीय इंजीनियर का परामर्श अवश्य लें।

➢ आसमानी बिजली से खतरों का ध्यान रखें

सभी तरह के इलेक्ट्रिक उपकरण टीवी, रेफ्रिजरेटर, कंप्यूटर-लैपटॉप की तरफ भी आसमानी बिजली अट्रैक्ट होती है. इसलिए ऐसा मौसम जब भी हो तो ऐसे उपकरण बंद कर देने चाहिए. वहीं बिजली के खंभे आसमानी बिजली के लिए कंडक्टर का काम करते हैं. इसलिए मौसम खराब होने पर बिजली के पोल से भी दूर रहना चाहिए. यहां भी वही लॉजिक लगता है कि ये सभी डिवाइस तार से कनेक्ट होते हैं. ऐसे मौसम में तार से कनेक्ट कोई भी डिवाइस इस्तेमाल करना समस्या पैदा कर सकता है।

➢ झटका लगे तो यह उपाय करें

व्यावहारिक बिजली या आसमानी बिजली का झटका लगने पर व्यक्ति को सीपीआर, कार्डियो पल्मोनरी रेसिटेंशन यानि कृत्रिम सांस देनी चाहिए. अगर किसी पर बिजली गिरी है, तो फौरन उनकी नब्ज जांचे और अगर आप प्राथमिक उपचार देना जानते हैं, तो ज़रूर दें। यदि डीवीसी परियोजना के अंदर काम कर रहे हैं तो पीड़ित को तुरंत डीवीसी प्राथमिक चिकित्सा केंद्र या अस्पताल भेजें।

व्यथा की कथाव्यथा की कथा

इंजिनियर बिजय महापात्र
पिता: श्रीमती शाश्वती महापात्र,
सूचना व जनसंपर्क विभाग

मेरे लिए जैसे शहर नया था, उसी तरह मैं भी शहर के लिए नया था। कोई भी नगर में मेरा नाम नहीं जानता था। विस्मय भरे नयनों में मेरा नाम नहीं जानता था। आकाश चूमने वाली ऊँची-ऊँची इमारतें थीं। और सायं-सायं करके चलती हुई कारें, मोटरें और स्कूटर। एक जगह पर खड़ा न रह कर मैं आगे बढ़ता रहा। ये रास्ते न जाने कहाँ शुरू हुए और कहाँ तक जाते हैं। क्या बैस पावच को या स्वर्गद्वार को। दोस्त फारुक मुझे दिखाई देगा? मन आकाश में आशा और आशंका के अनेक बादल। किसी को तो नहीं जानता फिर किससे पूछूँ। पूछने पर क्या कोई गाली देगा मरेगा?
सड़क पर खचाखच भीड़ जैसे शहरों पर लहर आदमी पर आदमी। जो नहीं जानता, वह अगर जानकार से पूछे तो इसमें गलती? इसीलिए मैंने पक्का इरादा किया कि जरूर मैं पूछूँगा चाहे धरती फट जाए या आसमान गिर पड़े। सर जी, साहब कह कर मैंने एक सरदार जी को संबोधित किया। लेकिन सरदार जी नहीं सुन पाए होंगे इसीलिए उन्होनें मेरी तरफ देखा भी नहीं। सरदार बगल की दूकान में चले गए। ऐसा हो सकता है कि शहर में कोई किसी की बात नहीं सुनता होगा। ऐसा मानकर मैं आगे बढ़ा। चलते-चलते मेरे पैरों में दर्द होने। मन ही मन मैंने उसे गाली दी। बदमाश अकेला छोड़ कर कैसे चला गया? इतने बड़े शहर में वह कहाँ छुप के रहा। पिछले दिनों वह मेरे साथ लुकाछिपी खेला करता था। गुरूद्वारे, ' कृष्णचूड़ा(लाल रंग के फूलों का पेड़) की शाखाओं गेहूं के खेत की क्यारी में कहीं छिप जाता था। उसके बाद मैं छिप जाता था तो वह मुझे ढूँढ कर निकाल लेता था। आज आधा दिन बिट गया लेकिन वह मुझे नहीं मिला। मुझे मालूम नहीं मैं चलते-चलते मंदिर के सामने खड़ा हूं। मैंने देखा पूजा समाप्त करके एक महिला फाटक की तरफ आ रही है। सोचा अगर मेरी माँ होती तो ऐसी ही दिखती। माँ कि छवि को याद करने की चेष्टा मैंने की। लेकिन मुझे कुछ याद नहीं पड़ा। यह प्रतीत हुआ जैसे स्मृति के सामने किसी ने ढूंढ की चादर फैला दी हो। जिससे निकट संबंध न हो, वह माँ कैसे हो सकती है। सुनाकर मैंने उससे कहा, 'मौसी, जरा सुनिए।'
क्या कहा, 'मौसी? ए लड़के तेरी हिमाकत। क्या मैं तेरी माँ की बहिन लगती हूँ।'
फिर क्या पूछता, मैं खिसक गया। मुझे लगा कि महिला माँ नहीं राक्षसी है जो मुझे सचमुच चबा जायेगी। मैं मुख्यमार्ग छोड़ कर गली में घुस गया। इस गली में भीड़ नहीं थी। क्या करूँ? मुझे शाम से पहले जैसा भी हो फारुक को ढूँढना ही होगा। मैं तो पहली बार शहर आया हूं वह तो कई बार आया है। उसे तो सब कुछ मालूम है। साहस करके मैंने एक फाटक खोला। भाग्य से वहां कुत्ता नहीं था। सामने के कमरे में दस्तक दी। अपना गाँव होता तो चिल्ला कर बुला सकता था लेकिन यह तो शहर है। अन्दर एक बूढ़े की आवाज सुनायी दी।
'कौन?'
मैंने कुछ उत्तर नहीं दिया, चुप रहा। बूढ़े बाहर बारामदे में आकर, देख पता नहीं क्यों चिल्लाकर पूछने लगा, कौन है रे तू'
'मैं।'
-क्या चोरी करने आया है।

नहीं बाबू जी, मैं फारूक को ढूँढने आया हूँ वह मेरा मित्र है।
भाग। फारूक कौन? बहकाकर चोरी करना तुम लोगों का काम है। तुम लोगों को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। जल्दी भाग वरना तुमने मामा के घर (जेल) भेज दूंगा। फिर कभी दुबारा आया तो अच्छा नहीं होगा।
फिर मैं मुख्यमार्ग पर आ गया। फारूक को ढूँढते-ढूँढते मैं भूख को भूल गया था। खली पेट रहते कितना और ढूँढता। रास्ते में पड़े पाइप में झाँक कर देखा, डस्टबिन की तरफ जाकर देखा। फारूक कहीं भी नहीं दिखा।
भूख बढ़ रही थी, पास में पैसा नहीं था, सड़क के मोड़ पर पानी का नल दिखायी दिया। सोचा कुछ पानी पीने से प्यास भी बुझेगी और भूख भी मिट जायेगी। पास जाकर भी, वहां तक नहीं गया। सोचने लगा नहीं जाऊँगा।कहीं कोई यह न कह बैठे कि तेरे बाप का नल है। जा भाग यहाँ से, कोई चोर-चोर चिल्ला देगा और लड़के पीछा करने लगेंगे। इस अजनबी शहर में मेरा सगा कौन है जो मेरी रक्षा करेगा? माँ मौसी दीदी कोई नहीं है। बदमाश फारूक एक ही मित्र था, वह भी इस अपरिचित शहर में मुझे छोड़कर भाग गया।
अगर वह मुझे मिल ही गया तो भी मैं उससे कभी बात नहीं करूँगा खुट्टी तुझसे खुट्टी डबल खुट्टी।
रास्ते के किनारे पार्क में सीमेंट की बेंच पर बैठी दो लडकियां चना-चूड़ा खा रहीं थीं। उनसे मांगने मैं जा ही रहा था, बड़ी लड़की बोली, 'क्यों घुर रहा है।' देखो तो कैसी लोलुप दृष्टि है।
खाने पर पेट दर्द करेगा। चलो चलते हैं। मुझे इतना बुरा लगा कि मैंने कहा मैं खाना नहीं मांग रहा हूँ।
- फिर क्यों देख रहा है।
- मैं अपने मित्र फारूक को देख रहा हूँ।
- तेरा घर कहाँ है?
- उधर
- पागल है न जाने क्या बक रहा है।
- चल पिंकी चलते हैं। नहीं तो हमारे पीछे पड़ जायेगा।
- पिंकी दीदी ! मैं पागल नहीं, मेरी बात सुनिए। मैं सच बोल रहा हूँ।

व्यथा सुनने के लिए वे दोनों नहीं रुकीं। खाली बेंच पर बैठ कर मैं रोने लगा। मेरे रोने से क्या प्रभाव पड़ेगा। मिल का सायरन बजेगा, वाहनों के चलने कि सायं –सायं होगी ट्रेफिक लाइट जलेगी-बुझेगी मेरे लिए कुछ भी बंद नहीं होगा। कोई ठहर कर नहीं पूछेगा, अरे क्यों रो रहा है। क्या भूख लगी है, क्या किसी ने मारा है, क्या किसी ने कुछ कहा है। मैंने समझ लिया यह मेरा गाँव नहीं, शहर है। कुत्ते कि तरह सीमेंट की बेंच पर मैं सिमट कर सोने की कोशिश करने लगा। आँख कब लग गई पता नहीं। जागने पर मैंने देखा कि एक महिला मेरे पास बैठी है। उसने अपने आँचल से मुझे धक् दिया था। मेरे जागने पर उसने मुझे गोदी में बिठा लिया। छाती से लगाकर उसने कहा, तू मेरा बाबुल है। कहाँ था इतने दिन मैं तुझे गाँव-गाँव शहर-शहर ढूंढ रही हूँ।
मुझे उसका स्पर्श सुहावना लगा। मैंने आँखें बंद कर लीं।
महिला मेरे बिना कंघे किये लटों को संवारने लगी, रोते हुए उसने कहा, 'मेरा बाबुल कितना दुर्बल हो गया है। दही चुड़ा खाने के लिए तू रोकर हठ करता था। तू पागल बनाकर कहाँ था? अपनी माँ को भूल गया।'
मैं उठ बैठा,
'बाबुल'
- मैं बाबुल नहीं,
- तेरा घर कहाँ है?
- घर

- तू कहाँ से आया है ?
- उस पार अपने मित्र के साथ।
- उस पार अपने मित्र के साथ।
- उस पार से
- हाँ
- कहाँ है तेरा मित्र?
- मैं उसे ही ढूँढ रहा हूँ। आपने देखा उसे? पायजामा गंजी पहने है।
- देखा नहीं।

तो क्या फारुक को मेरे सिवा किसी ने नहीं देखा

- तुम्हारा बाप
- नहीं हैं।
- माँ
- नहीं है।
- कोई अपना ?
- नहीं। वहीं फारुक ही है।
- गाँव में भाग कर आया है न?
- - हाँ, मैं भय से सीमा पार करके आया हूँ।

उस तरफ घमासान नरसंहार हो रहा है। लोग घर छोड़ कर भाग रहे है।
चुपचाप में कुछ समय बीत गया। बिना पलक झुकाये वह मेरी तरफ देख रही थी।
साहस करके मैंने पूछा, 'मौसी, बाबुल कौन?'

- बाबुल मेरा बेटा। तेरी जैसी लम्बी नाक, घुंघराले बाल, ओंठ के नीचे तिल का निशान, तू ठीक मेरे बाबुल जैसा है। मैंने उसे ढूंढ रही हूँ। क्या वह सचमुच मुझे मिलेगा।
- मेरा घर भी उसी तरफ है। उसी लड़ाई के चलते मैं अपने मित्र के साथ भाग आया।
- तेरा नाम जो भी हो तू ही मेरा बाबुल है
- मौसी ! मैं तेरा बाबुल नहीं हूँ।
- तू ही मेरा बाबुल है। तुझे क्या यह नाम पसंद नहीं?
- हाँ, पसंद है।
- मौसी, नहीं तब मुझे माँ बोल बाबुल।
- उसे माँ संबोधित करके मैं उससे लिपट गया।

पिता जीवन है

पिता जीवन है, संबल है, शक्ति है
पिता सृष्टि के निर्माण की अभिव्यक्ति है

पिता ऊंगली पकड़े बच्चे का सहारा है
पिता कभी कुछ खट्टा, कभी खारा है

पिता पालन है, पोषण है, परिवार का
अनुशासन है
पिता धौंस से चलने वाला प्रेम का
प्रशासन है

पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है
पिता छोटे से परिंदे का बड़ा आसमान है

पिता अप्रदर्शित अनंत प्यार है
पिता है तो बच्चों को इंतजार है

पिता से ही बच्चों के ढेर सारे सपने हैं
पिता है तो बाजार के सब खिलौने अपने हैं

पिता से परिवार में प्रतिपल राग है
पिता से ही मां का बिंदी और सुहाग है

पिता परमात्मा की जगत के प्रति आसक्ति है
पिता गृहस्थ आश्रम में उच्च स्थिति की
भक्ति है

पिता अपनी इच्छाओं का हनन और परिवार
की पूर्ति है
पिता रक्त में दिए हुए संस्कारों की मूर्ति है

पिता एक जीवन को जीवन का दान है
पिता दुनिया दिखाने का अहसान है

पिता सुरक्षा है सिर पर हाथ है
पिता नहीं तो बचपन अनाथ है

तो पिता से बड़ा तुम अपना नाम करो
पिता का अपमान नहीं उन पर अभिमान करो

क्योंकि मां बाप की कमी कोई पाट नहीं सकता
और ईश्वर भी इनके आशीषों को काट नहीं सकता

विश्व में किसी भी देवता का स्थान दूजा है
मां बाप की सेवा ही सबसे बड़ी पूजा है

विश्व में किसी भी तीर्थ की यात्राएं व्यर्थ हैं
यदि बेटे के होते मां बाप असमर्थ हैं।

वे खुशनसीब हैं माँ- बाप जिनके साथ होते है ।

श्रीमती ज्योति कुमारी
पति : श्री सुमन कुमार
सतर्कता विभाग, सीटीपीएस

दामोदर घाटी निगम (डीवीसी) और राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण संस्थान (एनपीटीआई) के बीच साझेदारी

सीटीपीएस के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 08/05/2024 को राजभाषा अनुभाग द्वारा सभी विभागाध्यक्ष/कार्यालय प्रधान के मध्य प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण) श्री अभिजीत घोष भी उपस्थित थे ।

डीवीसी गतिविधियाँ

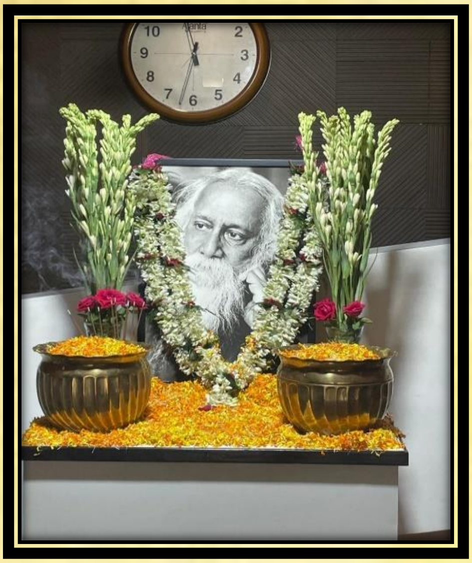

दामोदर घाटी निगम में दिनांक 08.05.2024 को रवीन्द्र जयंती का अनुपालन किया गया।

दामोदर घाटी निगम, कोलकाता में दिनांक 22.05.2024 स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान महिलायों के व्यक्तिगत स्वास्थ्य से सम्बंधित कार्यक्रम का आयोजन किया गया

23 मई 2024 को अध्यक्ष, डीवीसी ने डीएसटीपीएस का दौरा किया और स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम के तहत हस्ताक्षर अभियान और स्वच्छता सेल्फी में सक्रिय रूप से भाग लिया।

सीटीपीएस में स्वच्छता पखवाडा का अनुपालन

डीटीपीएस में स्वच्छता पखवाडा का अनुपालन

दिनांक 28.09.2024 को अध्यक्ष महोदय द्वारा द्वारा ई-कचरा निपटान बिन का उद्घाटन किया गया, जो स्थायित्व और स्वच्छता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मुख्यालय में दिनांक 28.09.2024 को अध्यक्ष महोदय द्वारा वृक्षारोपण करते हुए स्वच्छता पखवाडा का अनुपालन

प्रशासनिक शब्दावली

De jure	विधितः	Invoice	बीजक
Deduction	कटौती	Inward	आवक
Defacto	वस्तुतः	Remitee	प्रेषिती
Defendant	प्रतिवादी	Remote	दूरस्थ
Deficit	घाटा	Remuneration	पारिश्रमिक
Depreciation	मूल्यह्रास	Renewable	नवीकरणीय
Dias non	अकार्य दिवस	Remark	अभ्युक्ति
Disposal	निपटान	Relocation	पुनः स्थापन
Eligibility	पात्रता	Reopening	पुनःआरंभ
Equipment	उपस्कर	Repeal	निरसन
Eradication	उन्मूलन	Repugnant	विरुद्ध
Establishment	स्थापना	Repository	निधान
Ex- parte	एक पक्षीय	Resjudicata	पूर्व निर्णीत
Ex officio	पदेन	Respondent	प्रत्यर्थी
Exhibition	प्रदर्शनी	Restitution	प्रत्यास्थापन
Expartriate	प्रवासित	Resultant	परिणामी
Hearing	सुनवाई	Retrial	पुनर्विचारण
Hierarchy	क्रमबद्धता	Resumption	पुनरारंभ

मई,2024 में सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिकों को सूची

क्रम सं.	नाम	पदनाम	विभाग	केंद्र
1	श्री हरि नारायण पांडेय	प्रबंधक (रसायनज्ञ)	सीएंडएम ईएमपीसी	एमटीपीएस
2	श्री सुबीर भद्र	महाप्रबंधक (विद्युत)	सीएंडआई	बीटीपीएस
3	श्री काशी नाथ राम	चार्जहैंड (विद्युत) (पीजी)	ईएस- I	बीटीपीएस
4	श्री सुनील कुमार साहू	चार्जहैंड (विद्युत) (पीजी)	ओएंडएम	सीटीपीएस
5	श्री ग़जाली मोइद	कार्यालय अधीक्षक (पीजी)	वित्त एवं लेखा	बीटीपीएस
6	श्री उमेश सिंह	सहायक नियंत्रक (विद्युत) (पीजी)	प्रणाली	पारेषण (रामगढ़)
7	श्री मंजीत सिंह	ऑटोमोबाइल चालक (पीजी)	ओएंडएम	बीटीपीएस
8	श्रीमती शीला एम आर नायर	नर्सिंग सिस्टर (पीजी)	चिकित्सा	बीटीपीएस
9	श्री कलवंत सिंह	तकनीकी सहायक ग्रेड-III	ओएंडएम	सीटीपीएस
10	मोहम्मद समसुद्दीन नंबर 1	कनिष्ठ मजदूर	असैनिक	सीटीपीएस